Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAJASTHAN

LOWER DIVISION CLERK

लिपिक ग्रेड II एवं कनिष्ठ सहायक

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 1

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN L.D.C.

CONTENTS

भारत का भूगोल

1.	भारत का विस्तार	1
2.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	6
3.	भारत का अपवाह तंत्र	35
4.	जैव विविधता	50

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	59
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	65
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	77
4.	राजस्थान की झीलें	85
5.	राजस्थान की जलवायु	90
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	97
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	102
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	107
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	116
10.	राजस्थान में पशुधन	125
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	129
12.	राजस्थान की जनसंख्या	139
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	142
14.	राजस्थान में उद्योग	146
15.	राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण	150

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास
   - परिचय 153
   - प्राचीन सभ्याताएँ 156
   - महाजनपद काल 163
   - मौर्यकाल 161
   - मौर्योत्तर काल 161
   - गुप्तकाल 161
   - गुप्तोत्तर काल 162
2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 163
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ
3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 205
   - 1857 की क्रांति 205
   - प्रमुख किसान आन्दोलन 207
   - प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 211
   - प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 212
   - राजस्थान का एकीकरण 216
4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 221
   - राजस्थान के त्यौहार 221
   - राजस्थान के लोक देवता 227
   - राजस्थान की लोक देवियाँ 232
   - राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 236
   - राजस्थान के लोकगीत 242
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 243
   - राजस्थान के संगीत 244
   - राजस्थान के लोक नृत्य 245
   - राजस्थान के लोकनाट्य 249
   - राजस्थान की जनजातियाँ 252

- राजस्थान की चित्रकला 255
- राजस्थान की हस्तकलाएँ 261
- राजस्थान का साहित्य 264
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 270
- राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र 272

5. राजस्थान की स्थापत्य कला 277
   - किले एवं स्मारक 277
   - राजस्थान के धार्मिक स्थल 286
   - राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज 291
   - राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 293
   - वेश–भूषा व आभूषण 297

अर्थव्यवस्था

1. कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र 302
2. औद्योगिक विकास 305
3. आधारभूत संरचना का विकास 306

भारत के भौगोलिक भू–भाग

(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भाग

इसे मुख्यतः 5 भौतिक भागों मे बाँटा है जो निम्न है (**NCERT** में 6 भागों में विभाजित किया गया है ।)

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तरी मैदानी प्रदेश
3. प्रायद्वीप पठारी प्रदेश
4. तटीय मैदानी प्रदेश
5. द्वीपीय समूह प्रदेश

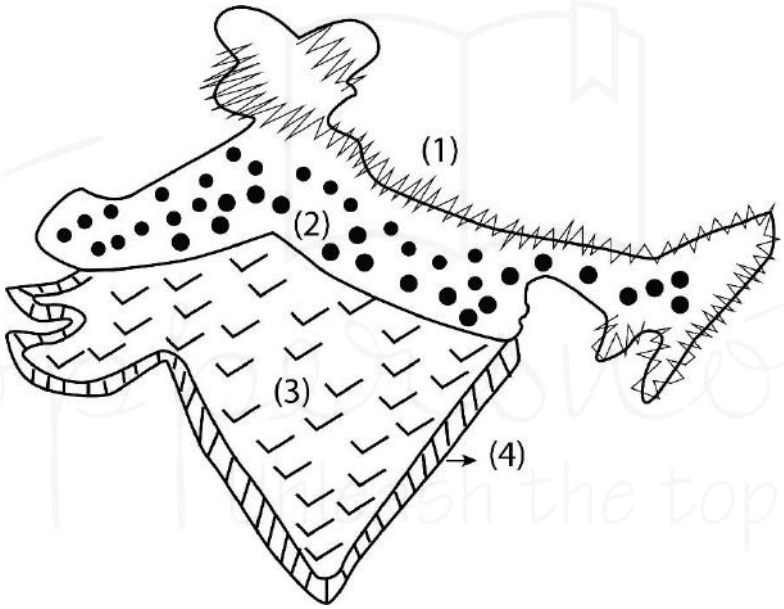

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश

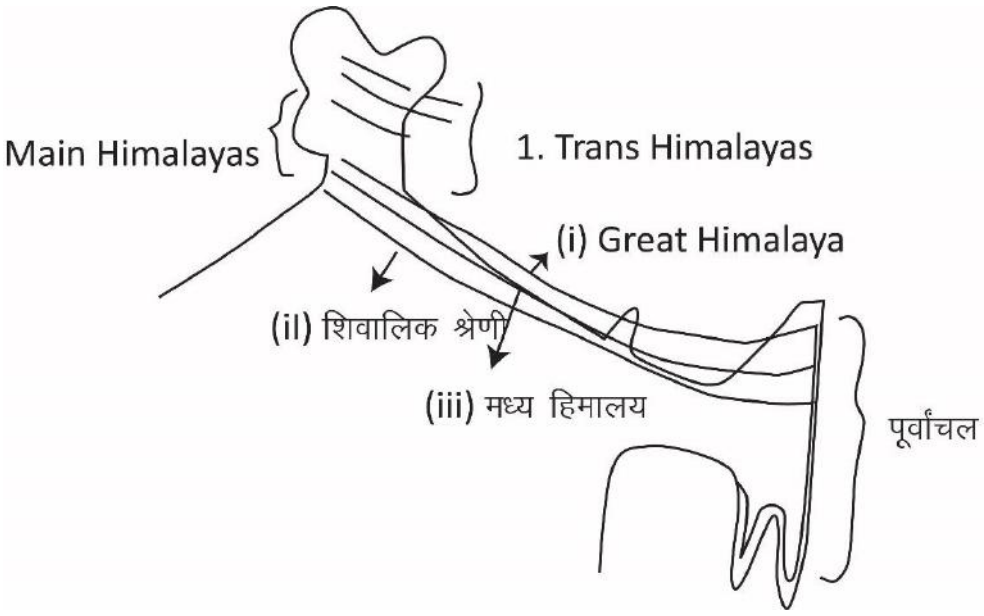

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण टर्शरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

ट्रांस हिमालय

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है :–

(a) काराकोरम श्रेणी

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी कहलाती है ।
- यह ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है :–
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन
- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'एकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है । जो विश्व की सबसे तीव्रतम ढाल वाली चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note

लद्दाख पठार

- कराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार है ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

मुख्य हिमालय

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:-
  - (a) वृहद् हिमालय (Greater Himalaya)
  - (b) मध्य हिमालय (Middle Himalaya)
  - (c) शिवालिक (Shivalik)

(a). वृहद् हिमालय (Greater Himalaya)

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी तक विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एवं औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है । इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8849 मी.) स्थित है ।
- इस श्रेणी मे कंचनजंघा (8598 मी.), मकालू (8484 मी.) धौलागिरी (8172 मी.), नंगा पर्वत (8126 मी.) आदि स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है । इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान इत्यादि ।
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।

- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रे निम्न है :-

➢ बुर्जिल	➢ नीति
➢ जोजीला	➢ लिपुलेख
➢ बडालाचा	➢ नाथुला
➢ शिपकीला	➢ डेलेप्ला
➢ माना	➢ बोमडीला

(i). बुर्जिल दर्रा
- यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्रा
- यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
- इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बाडालाचा दर्रा – यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्रा
- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
- इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना :- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीति :- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्रा
- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा
- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
- इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है

- मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जेलेप–ला दर्रा :– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडीला दर्रा :– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya)

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैः–
  - जम्मू कश्मीर – पीरपंजाल
  - हिमाचल प्रदेश – धौलाधर
  - उत्तराखण्ड – मसूरी/नागटिब्बा
  - नेपाल – महाभारत
  - सिक्किम – डोकया
  - भूटान – ब्लैक माउण्टेन

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैः–
  - कश्मीर घाटी = वृहद् हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहद् हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहद् हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहद् हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे **'मर्ग'** तथा उत्तराखण्ड मे **'बुग्याल, पयार'** कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी आदि ।
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :–
  1. पीरपंजाल दर्रा :– यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
  2. बनिहाल दर्रा :– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है । यह NH44 पर बनाया गया है ।

राजस्थान में खनिज

- राजस्थान खनिज संसाधनों की दृष्टि से सम्पन राज्य है । इसे खनिजों का संग्रहालय एवं अजायब घर कहा जाता है ।
- देश की 19 प्रतिशत कार्यरत खानें राजस्थान में है । जिनका देश में उत्पादन की दृष्टि से 9 वां स्थान है ।
- डोस्पार, सैलेनाईट, गार्नेट, वॉलस्टोनाइट, पन्ना के उत्पादन में राजस्थान देश में एक मात्र राज्य है ।

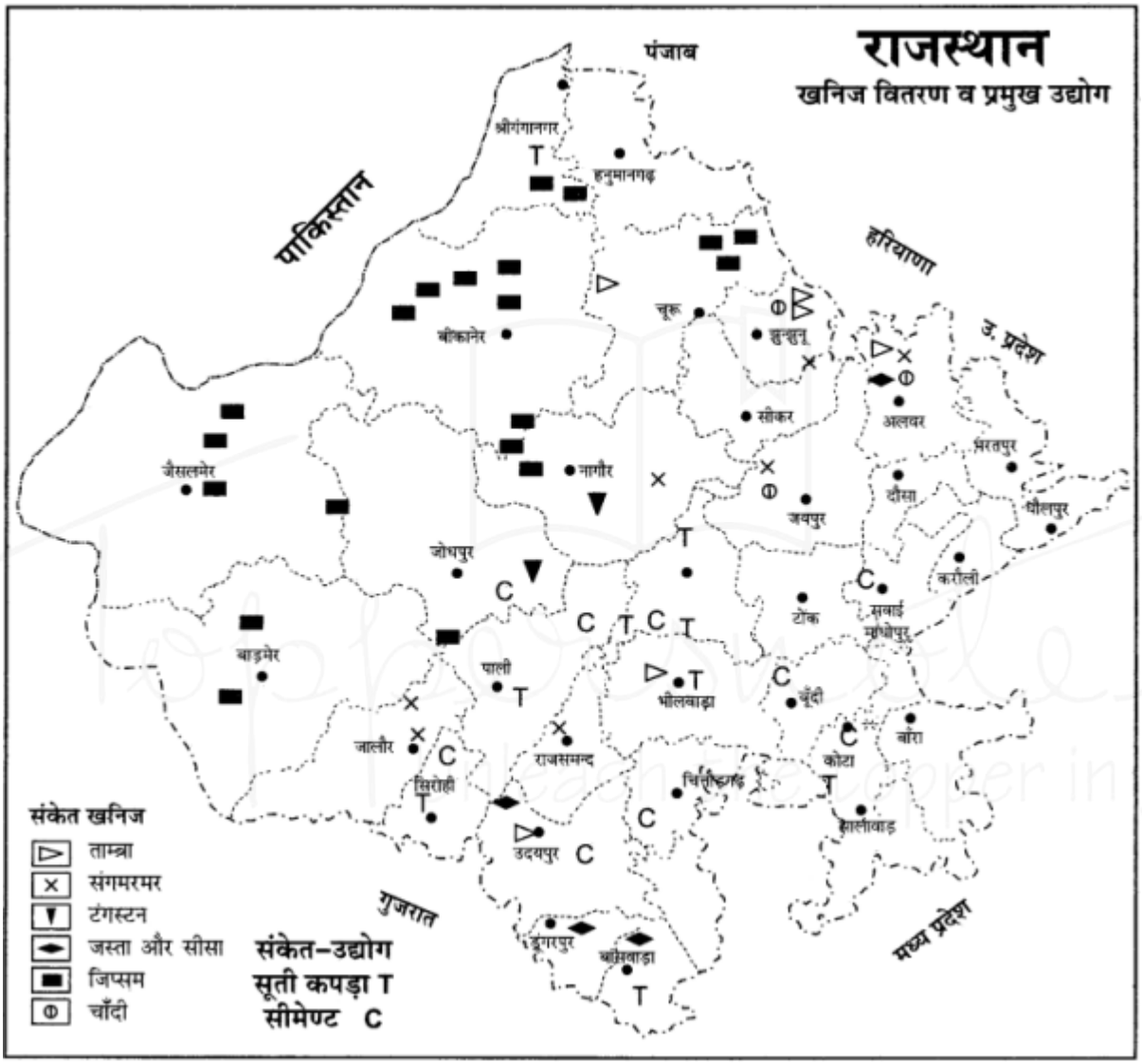

मानचित्र – खनिज वितरण व प्रमुख उद्योग

खनिज दृष्टिकोण

भण्डारण	उत्पादन	विविधता	आय
राजस्थान द्वितीय स्थान	द्वितीय उत्पादित खनिज–57	प्रथम खनिज प्रकार – 81	आठवां

1. खनिज भण्डारण

खनिज भण्डारण सर्वाधिक अरावली में पाया जाता है, इस कारण अरावली को खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

2. खनिज उत्पादन

राजस्थान देश के कुल खनिज उत्पादन का 9 प्रतिशत उत्पादित करता है

जिसमें धात्विक – 15 प्रतिशत अधात्विक–25 प्रतिशत अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है ।

3. खनिज विविधता

खनिज विविधता के आधार पर राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है

4. खनिज आय

खनिज आय की दृष्टि से राजस्थान पिछडा हुआ राज्य है क्योकि यहाँ से मुख्यतः अधात्विक खनिज का उत्पादन होता है ।

राज्य की खनिजों को निम्नलिखित 3 श्रेणियों मे विभाजित किया जा सकता है ।

खनिज वर्गीकरण		
धात्विक	अधात्विक	ईधन खनिज
वे खनिज जिनसे धातुओं की रासायनिक तथा क्रियाओं द्वारा परिष्कृत या कार्बन अलग किया जा सकता है प्रयोग – वे सामान्यतः अयस्क के होता है । रूप में पाये जाते है । लौह धात्विक : कोबाल्ट, क्रोमाइट, लोहा, मैंगनीज, निकल, टंगस्टन, टाइटेनियम अलौह धात्विक : सोना, चांदी, प्लेटिनम, सीसा, जस्ता, टिन, बॉक्साइट, एल्युमिनियम, मैग्नीशियम, मर्करी	वे खनिज जिन्हें रासायनिक क्रिया से परिष्कृत कर मूल खनिज से पृथक नही किया जा सकता है, इन्हे औद्योगिक खनिज भी कहा जाता है • अभ्रक • डिप्सम • पत्थर • क्ले	वे खनिज जो प्रत्यक्ष ऊर्जा प्रदान करते है जिनमें हाइड्रोजन पाया जाता है । इनका ईधन के रूप में ऊर्जा खनिज : • कोयला • पेट्रोलियम • प्राकृतिक गैस

धात्विक खनिज

लौह अयस्क

हेमेटाइट किस्म का लोहा मिलता है ।

राजस्थान का प्रथम लौह अयस्क परिष्करण संयंत्र–पूर भीलवाडा तिरंगा पहाडी पर स्थापित किया गया था ।

- हमारा लौहे का बडा ग्राहक जापान (68 प्रतिशत) है ।

प्रमुख स्थल

- जयपुर – चौमू, टोडा–चिपलाटा थोई बनिया का वास, तातेरी बांगावास, भट्टो की गली, मोरीजा – बानोला ।
- सीकर – नीमकाथाना – बगोली, खराय – पंचलंगी
- झुंझुनूँ – खेरडी, डाबला–सिघाना
- उदयपुर – नाथराकीपाल, हुंडेर
- भीलवाडा, डुंगरपुर, बांसवाडा तक पेटी काकरोली, उदयपुर
- दौसा – नीमला गांव
- बूंदी – लोहारपुर
- डुंगरपुर – लोहरिया, खाचरिया, तालवारा भीलवाडा – पादरपाल, डाग, इन्द्रगढ,
- बांसवाडा – कमलपुर, लामया

मैंगनीज

अवसादी शैलों से प्राप्त होने वाला यह खनिज राज्य में कम मात्रा में पाया जाता है ।

रंग – काला

उपयोग – लोह इस्पात (लोहे को कठोर करने के लिए 1 टन में 6 kg.)

बांसवाडा – लीलवानी, नराडिया, सिवोनिया, कालखुन्टा, कासला, सागवा, इटाला, तिम्यामौरी, खेडिया, काचला, तलवाडा आदि ।

उदयपुर- नेगडिया स्वरूपपुरा, रामौसन, जयपुर व सवाईमाधोपुर मे क्वार्टजाइट शिलाओं की दरारों में मैंगनीज पाया जाता है ।

सीसा और जस्ता

- देश का लगभग 80 प्रतिशत सीसा व 99 प्रतिशत जस्ता उत्पादन राजस्थान में होता है ।
- सीसा जस्ता मिश्रण गेलेना कहलाता है।
- जस्ता + ताँबा - पीतल
- ताँबा + टिन - कांसा
- सीसा, जस्ता चांदी मिश्रित रूप में मिलता है ।
- सीसा जस्ता के सान्द्र के मिश्रित रूप में प्रतिशत 25.3 औंस, व 5.6 औंस चांदी की मात्रा होती है ।
- सह उत्पाद के रूप में केलियम भी मिलता है । राज्य में 4 करोड टन सीसे जस्ते भण्डार होने का अनुमान ।
- सीसा, जस्ता के मिश्रित रूप को गैलेना कहते है ।
- चन्देरिया (चित्तौडगढ) में ब्रिटेन की सहायता से सुपर जिंक स्मेल्टर संयंत्र स्थापित किया गया है । जिसका एशिया में प्रथम स्थान है ।

(i) जावर (उदयपुर) - जावरमाला, बरोड मगरा, मोचिया मगरा ।
(ii) राजपुरा - दरिया (उदयपुर)
(iii) आगुचा गुलाबपुरा - भीलवाडा
(iv) घुंघराव - डुंगरपुर
(v) वरडालिया - बांसवाडा
(vi) जोपार एवं तुरंगी - सिरोही
(vii) चौथ का बरवाडा - सवाईमाधोपुर
(viii) गुढा-किशोरी पास - अलवर

ताँबा

- ताँबे का अयस्क - सल्फाइड, ऑक्साइड, कार्बोनेट
- ताँबे का उतउत्पाद रूप - सल्फ्यूरिक एसिड (सुपर फॉस्फेट खाद बनाने में)
- मानव द्वारा खोजी गई प्रथम धातु तांबा थी ।
- राजस्थान में सर्वाधिक तांबा झुंझुनूं में मिलता है, इसी कारण झुंझुनूँ को तांबा जिला व आहड (उदयपुर) को ताम्र नगरी कहते है ।
- खेतडी - सिंघाना (झुंझुनूँ) - कोल्हन, मन्थान, खेतडी, पपरना, बबाई, पश्चिम, बरखेडा
- अलवर - खौ - दरीबा, थानागाजी, कुलशगढ, सेनपरी, भगत बास ।
- उदयुर - दरीबा
- बीकानेर - बींदासर
- भीलवाडा, कोटा व झालावाड

टंगस्टन

- उपयोग - बिजली के बल्ब व सुरक्षा अस्त्रों में, वाल्दा सिरोही में भी टंगस्टन मिलता है ।
- टंगस्टन हीरे के बाद सबसे कठोर धातु है । इसका मुख्य अयस्क ''वोल्फ्रोमाइट'' है ।
- डेगाना (नागौर) - एक मात्र खान देश की ।

अजमेर - नागौर सीमा - सेवरिया, पीपलिया, बीजाथल पाली में सम्भावना
(a) आबू रेवदर (सिरोही)
(b) नाना कराब, पिडराला-बीजापुर(पाली)
(c) सेवरिया, पिपलिया(पाली)

नोट :- टंगस्टन एक भारी धातु है जिसका गलनांक उच्च होता है।

बेरिलियम

- एलुमिनियम का सिलकेट होता है ।
- हल्का हरा, पीला, सफेद होता है ।
- इस खनिज को खरीदने का एकाधिकार केवल भारतीय सेना के पास है ।
- राजस्थान में अच्छी किस्म का बेरीलियम पाया जाता है ।

प्रमुख स्थल

- उदयपुर - अमेटा के बिरल शिकारवाडा सिलेका, गढा, चम्पा गढा, राण आमेट ।
- जयपुर - बादर सिन्दरी व गुजरवाडा
- भीलवाडा - देवडा व तिलोली गांव
- डुंगरपुर - सागवाडा
- सीकर - नीमकाथना
- टोंक

चाँदी एवं सोना

उदयपुर, भीलवाडा की सीसा जस्ता खानों से चांदी भी निकाली जाती है ।

स्वर्ण - बांसवाडा - आनन्दपुर, भुकिया ।

1. चाँदी उत्पादन की दृष्टि से भारत में राजस्थान का प्रथम स्थान है ।

- देश की चांदी की सबसे बडी खान जावर (उदयपुर) में है, जहां से देश की कुल चांदी की 99.46 प्रतिशत चांदी प्राप्त होती है ।
- सोना 2006 में होने वाले भू-सर्वेक्षण के सर्वे की सूचना के अनुसार अजमेर की भिनाय तहसील के छछुंदरा व जोराबरपुरा क्षेत्र में सोना निकलने की संभावना व्यक्त की है ।
- आनंदपुरा भूकिया क्षेत्र व जगतपुरा भूकिया क्षेत्र में स्वर्ण भंडारों की खोज ऑस्ट्रेलियाइ कंपनी ''इण्डो गोल्ड'' ने की थी ।

अधात्विक खनिज - निम्न श्रेणियों में

- उर्वरक खनिज - जिप्सम, रॉक, फास्फेट, पाईराइट
- बहुमूल्य पत्थर - पन्ना, तामडा, हीरा
- आणविक एवं विद्युत उपयोगी - अभ्रक, युरेनियम
- उष्मारोधी, उच्चतापसह, प्रतिका खनिज - एस्बेस्टास, फेल्सपार, सिलिका सैंड, क्वार्ट्ज, मेगनेसाइट, वरमेकुलेट, चीनी मिट्टी, डोलोमाइट
- रासायनिक खनिज - नमक, बेराइट, चूना पत्थर, फ्लोराइट
- इमारती पत्थर - सैंडस्टोन, संगमरमर, ग्रेनाइट, स्लेट
- अन्य खनिज - घीया पत्थर, केल्साइट, पायराइट, स्टेलाइट

एस्बेस्टॉस - उपनाम - मिनरल सिल्क

उपयोग - सीमेंट, चादरे, टाइले, फिल्टरसे, तापनिरोधक वस्तुएं

देश का कुल 90 प्रतिशत भाग उत्पादित राजस्थान रेशदार खनिज रूई के रूप में निकलता है इस रेशों में जल्दी आग न पकडने का गुण होता है ।

- राजस्थान में एम्फीबोलाइड किस्म का एस्बेस्टॉस पाया जाता है ।

उत्पादक क्षेत्र

- उदयपुर - खेरवाडा, रिषभदेव, नाथद्वार, काथल, आसिन्द सलुम्बर, बरना, गुंजाम
- डुंगरपुर - देवल, खेपारू, पीपरदा, मलवा, डुंगरपुर, साश्भ, जकोल
- अजमेर, जोधपुर में मात्रा में एस्बेस्टॉस मिलता है ।

फेल्सपार

- 60 प्रतिशत भारत का उत्पादन होता है ।
- यह अभ्रक का सहउत्पाद है ।
- राज्य का 96 प्रतिशत उत्पादन अजमेर करता है ।
- मिश्रित खनिज है । जिसके साथ पोटाश व सोडास्पर भी पाया जाता है ।

उत्पादक क्षेत्र

अजमेर - ब्यावर

जयपुर - डुंगरपुर, दादियां, बान्देवदनेनी, गुजरवाडा

पाली - चाक्षेदिया, प्रतापगढ, डिग्गोर, फूलद, बाडा ।

अभ्रक

उपयोग - विद्युत उपकरण, सजावट समान, अग्निक प्रतिरोधक पदार्थ, अग्नि प्रतिरोधक आणविक इन्सुलेटिंग ब्रिक्स, भीलवाडा में अभ्रक की ईंटें ।

अभ्रक को खनिज व्यवसाय का बीमार बच्चा कहते है ।

मस्कोलाइट अभ्रक - सफेद अभ्रक (टुकडे धारियों के रूप में)

बायोटाइट अभ्रक - हल्का गुलाबी

रूबी अभ्रक - सफेद

- राजस्थान में 40 प्रतिशत रूबी अयस्क है ।

उत्पादक क्षेत्र

- जयपुर टौंक पेटी
- टौंक - बरला, मानखंड, शंकरवाडा, बारचौला, मिराऊ, धौली, बारेली, पालरी
- जयपुर - बंजारी, लक्ष्मी, भोजपुरा, माधोराजपुरा, कनर्वा का बास
- भीलवाडा - उदयुर पेटी
- भीलवाडा - नात - की - नेरी, तूनका, सिंदरियास, चापरी, रतनगाजा, बंजारी, घोघास, बेमाली, कोचरिया, गोकुलपुरा, घावमण्ड
- उदयपुर - चम्पागढ, धौलामेतरा, मालवा

अन्य क्षेत्र -

- सीकर में तोरावटी क्षेत्र
- अजमेर, अलवर, राजसमन्द, पाली ।

जिप्सम

उपभोग - रासायनिक उर्वरक, प्लास्टर ऑफ पेरिस रंग - रोगन

- सर्वाधिक उत्पादन राजस्थान करता है 90 प्रतिशत ।
- रेवेदार रूप में इसे सेलेनाईट के रूप से जाना जाता है ।
- क्षारीय भूमि से होने वाली सेम की समस्या के समाधान के लिए जिप्सम का प्रयोग किया जाता है ।

1. बीकानेर – गंगानगर – चुरू क्षेत्र देश के 17 प्रतिशत जिप्सम भण्डार का अनुमान ।
   लुणकरणसर, सियासर, हरकासर, पुंगल, जामसर – बीकानेर जामसर राज्य का सबसे बडा जिप्सम भण्डार गंगानगर–हनुमानगढ, चुरू–अन्य क्षेत्र
2. नागौर
3. बाडमेर – कवास, कुरला, श्योंकर (शिव्कर) उतरलाई, पारमी धामी ।
   जैसलमेर – लक्खा, मोहनगढ, हपीरवाली
   पाली – खुटाणी
   जोधपुर

रॉक फास्फेट

उपयोग – रासायनिक उर्वरकों में ।

- देश का 56 प्रतिशत रॉक फास्फ्फेट उत्पादन करता है ।
- रॉक फॉस्फेट आग्नेय व अवसादी चट्टानों से एम्पेटाइट व फॉस्फोराइट आदि के रूप में प्राप्त होता है ।

उत्पादन क्षेत्र

- उदयपुर – कानपुर, कारबेरिया, डाफन – कोटडा, मटून, सीसरमा, नीमचमाता, बडा गांव, झामर कोरडन ।
- बांसवाडा – रतलोपेट
- जैसलमेर – बीरमानियां एवं फतेहगढ
- जयपुर – अडूका – अदवानी ।
- डोलोमाइट – कैल्सियम एवं मैगिनिशियम कार्बोनेट को डोलामाइट कहते है ।

उपयोग

उच्च ताप यह पदार्थ बनाने, इस्पात एवं खनिज ऊर्जा में किया जाता है ।

उत्पादक क्षेत्र

- बांसवाडा – विट्ठलदेव, खमेरा, जगपुरा,
- त्रिपुरा – सुन्दरी, अमरपुरा
- उदयपुर – धरियावाद
- राजसमंद – ईसवाल, हल्दीघाटी, कोठारिया, नाथद्वारा, औडन, राजनगर, मोरचना, तलाई, अगरिया ।
- अलवर, सीकर, झुंझुनूँ, भीलवाडा, नागौर ।
- सिलिका सैण्ड या कांच बालुका – उपयोग – कांच बनाने में ।
- धौलपुर कांच फैक्ट्री में उपयोग

उत्पादक क्षेत्र

- बूंदी – बारेदियां
- जयपुर – छर सांगोट, चित्तौडी, कुण्डाल, धूलाधोपुर, मनोता, बांसखों, वथाल ।
- सवाईमाधोपुर – एलनपुरा, नारायाणपुर, नरोली, टटवास, सापोतरा ।
- भरतपुर – जगजीवनपुर, हथौडी ।
- कोटा – कुण्डी ।
- बाडमेर – शिव
- चाइना ग्ले – केओलिन अन्य नाम

उपयोग

- तापरोधी उपकरणों मे ।
- 45 प्रतिशत चाइना ग्ले का उत्पादन राजस्थान में ।

उत्पादक क्षेत्र

अलवर, बाडमेर, भीलवाडा, बीकानेर, चित्तौड, नागौर, जैसलमेर, उदयपुर ।
फायर क्ले – उपयोग अग्नि अवरोधक के रूप मे ।

उत्पादक

- बीकानेर – कोलायत में – कोटरी, गढ, रानेरी, ईडकाबाला
- भीलवाडा– मंगरूप, बनियाखेडा
- चित्तौड – एरल

मैग्नेसाइट

उपयोग – कांचरोधी ईट एवं सीमेंट, कांच और कपडा उद्योग में किया जाता है ।

उत्पादक क्षेत्र

पाली – सेन्दरा
अजमेर – सरूया छाजा
उदयपुर – लेबा का गुंडा
डुंगरपुर – खेल, पीठ, डुंगर ।

राजस्थान में पशुधन

पशुओं का योगदान

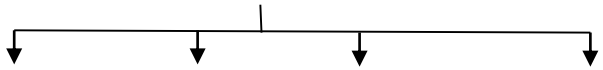

ऊन	दुग्ध	माँस	अर्थव्यवस्था
40%	10%	35%	9%

पशु या पशुओं का समूह जिसे कृषि कार्यो, देशे, श्रम, खाद्य, उत्पाद तथा अन्य कार्यो के लिए पालतू बनाया जाता है, उन्हे पशु-धन कहते हैं ।

राजस्थान में पशुगणना का कार्य राजस्वमण्डल अजमेर द्वारा किया जाता है

- पशुगणना प्रति 5 वर्ष में आयोजित होती है ।
- प्रथम पशुगणना-1919-1920 में आयोजित की गई
- नवीनतम 20वी पशुगणना-2017 में आयोजित की गई ।
- नवीनतम पशु गणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशु सम्पदा- 5.68 लाख
- नवीनतम पशु गणना के अनुसार पशुः-

सर्वाधिक	सबसे कम
1. बाडमेर	1. धौलपुर
2. जोधपुर	2. कोटा
3. जैसलमेर	3. सवाई माधोपुर
4. नागौर	4. बाराँ

- 20वी पशु गणना में पशु सम्पदा में बढोतरी-1.89%
- 20वी पशु गणना में राजस्थान में पशु सम्पदा देश की कुल पशु सम्पदा का-11.27%
- 20वी पशुसम्पदा के अनुसार राजस्थान में पाये जाने वाले सर्वाधिक पशु :-
  - प्रथम बकरी - 36.70% (208.4 लाख)
  - द्वितीय गाय - 24.50% (139 लाख)
  - तृतीय भैंसे - 24.11% (137 लाख)
  - चतुर्थ भेड - 13.92% (79 लाख)
- 20वी पशुगणना के अनुसार राजस्थान के पशुधनत्व-166

अधिकतम	न्यूनतम
(1) डूँगरपुर (433)	(1) जैसलमेर (62)
(2) बाँसवाडा (386)	(2) बीकानेर (90)
(3) दौसा (308)	(3) बारां (110)
(4) जयपुर (208)	

- 20वी पशुगणना में सर्वाधिक बढोतरी वाले पशु

(संख्या के आधार पर)	(प्रतिशत के आधार पर)
1. भैंस	1.खच्चर-280.93 प्रतिशत
2. गाय	2. भैंस-16.99 प्रतिशत
3. बकरी	
4. सुअर	

20वी पशुगणना में सर्वाधिक कमी वाले पशु

संख्या के आधार पर	प्रतिशत के आधार पर
1. भेड	1. गधा (71.31%)
2. बकरी	2. खच्चर (60.33%)
3. ऊँट	3. सुअर (34.87%)
4. सुअर	4. ऊँट (34.69%)

नोट -

- पशुओं की नस्ल के आधार पर गणना 18वीं पशुगणना (2007) में की गयी थी।
- देश में राजस्थान का
  बकरा मांस उत्पादन में राज. - प्रथम स्थान
  ऊन उत्पादन में - प्रथम स्थान
  पशुसम्पदा में - द्वितीय (Ist U.P.)
  दुग्ध उत्पादन में - द्वितीय-12.73% (Ist U.P.)

राजस्थान में गोवंश की देशी व विदेशी नस्ले पायी जाती है ।

गौवंश

गौवंश- सर्वाधिक -उदयपुर, चित्तौडगढ

गौवंशी की नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. राठी	बीकानेर, श्रीगंगानग, जैसलमेर	सर्वाधिक दूध देने के कारण राजस्थान की कामधेनू प्रजनन केन्द्र - नोहर (हनुमानगढ)
2. थारपारकर	जैसलमेर, बाडमेर, जोधपुर	मूल स्थान-सिंध प्रांत (पाकिस्तान) की नस्ल प्रजनन केन्द्र - किशनगढ
3. गीर	अजमेर, भीलवाडा, चित्तौडगढ	मूलतः गुजरात की नस्ल
4. नागौरी	अजमेर, भीलवाडा, चित्तौडगढ	नागौरी बेल दौडन में, भारवहन तथा कृषि
5. कांकरेज	बाडमेर, जालौर	मूलतः गुजरात की नस्ल

6. मेवातीब	अलवर, भरतपुर	बोझा ढोने हेतु प्रजनन केन्द्र – बस्सी
7. हरियाणवी	सीकर, झुंझुनूँ	मूलतः हरियाणा की नस्ल सर्वाधिक गाय गाय की सीर की हड्डी उठी होती है ।
8. मालवी	दक्षिणी पूर्वी राजस्थान	मूलतः मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र प्रजनन केन्द्र – डग (झालावाड)
9. सांचौरी	जालौर, सिरोही	प्रजनन केन्द्र–चौहटन (बाड़मेर) प्रजनन केन्द्र–चौहटन (बाड़मेर)

- गाय के मांस को बीफ कहते है ।
- गौ–मूत्र बैंक– सांचौर

विदेशी नस्ले

1. रेडडेन :– मूल स्थान–डेनमार्क
   - राज्य में बिखरी हुई पायी जाती है ।
   - दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है ।

2. हॉलिस्टिन :– मूल स्थान हॉलैण्ड अमेरिका
   - राज्य के मध्य एवं पूर्वी भाग में पायी जाती है ।
   - सर्वाधिक दूध देती है ।

3. जर्सी :– उत्पति–अमेरिका
   - मध्य एवं पूर्वी राजस्थान में पायी जाती है ।
   - कम आयु में ही दूध देना प्रारम्भ कर देती है ।

निष्कर्षत गायों की राजस्थान की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। यही कारण है । यही कारण है कि वर्ष 2014 में राजस्थान सरकार ने गोवंश के संरक्षण व संवर्धन के लिए गो–पालन विभाग स्थापित कर दिया है ।

राजस्थान में प्रमुख द्विप्रयोजनीय गौवंश

- गिर
- कांकरेज
- हरियाणवी

राजस्थान में दूध देने वाली गाय की प्रमुख फसलें

राजस्थान में मुख्यतः भारवाहक नस्ले पायी जाती है किन्तु फिर भी कुछ देशी व विदेशी गोवंश की नस्ले दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है :–

डैरी – राठी(सर्वाधिक दूध), सांचौरी, थारपारकर, हरियाणवी, गिर, कांकरेज

इनके अलावा हॉलिस्टिन, रेडडेन, जर्सी गायें भी दुग्ध–उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है ।

भेड

- भेड के मांस को मटन बोलते है ।

1. मारवाडी :– जोधपुर, नागौर, बाड़मेर, पाली, सिरोही में पायी जाती है ।
2. मालपुरी :– यह टोंक, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा, करौली, अजमेर में पायी जाती है । गलीचे के लिए प्रसिद्ध
3. सोनाडी :– यह दक्षिणी राजस्थान के बांसवाडा, डूँगरपुर, प्रतापगढ, चित्तौडगढ, भीलवाडा में पायी जाती है । कान लम्बे होते है इसे चनोथर भी कहते है ।
4. नाली :– यह श्रीगंगानगर, चूरू, बीकानेर व सीकर में पायी जाती है । इसका रेशा लम्बा होता है ।
5. चोकला :– यह सीकर, चूरू, झुंझुनूँ, बीकानेर, जयपुर आदि जिला में पायी जाती है ।
6. बागडी :– यह अलवर जिले में पायी जाती है ।
7. पूगल :– यह बीकानेर, जैसलमेर व नागौर क्षेत्र में पायी जाती है ।
8. जैसलमेरी :– यह जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर जिलों मेंपायी जाती है । सर्वाधिक ऊन देती है ।
9. मगरा :– यह बीकानेर, जैसलमेर व नागौर क्षेत्र में पायी जाती है ।
10. खेरी :– यह जोधपुर, पाली व नागौर में पायी जाती है ।
    - करणी व करणियों–भेड के मादा बच्चे को स्थानीय भाषा मं करणी तथा नर बच्चे को करणियों या करण्यो कहा जाता है ।
    - रेवड – भेडों के झुण्ड को राजस्थान में रेवड कहा जाता है ।
    - भेड अनुसंधान – 1962 अविकानगर (टोंक)

राजस्थान में पायी जाने वाली विदेशी नस्ल की भेडें

1. मेरिनों :- इसकी उत्पति स्थल ऑस्ट्रेलिया है ताकि इसकी ऊन उन्नत किस्म में होती है - यह राजस्थान में टोंक, सीकर, जयपुर आदि जिलों में पायी जाती है।
2. डोर्सेट :- यह भी टोंक जिले में पायी जाती है । इसकी ऊन उत्तम किस्म की होती है ।
3. रेक्बुले :- यह भी टोंक जिलो में पायी जाती है तथा इसकी ऊन उन्नत किस्म की होती है ।
4. कोरिडेल :- यह चित्तौडगढ जिले में पायी जाती है तथा इसका मांस भी उपयोगी होता है ।

भेडे -सर्वाधिक- बाडमेर

बकरियाँ

इसे 'गरीब की गाय' भी कहा जाता है तथा 'चलता-फिरता फ्रिज' भी कहा जाता है ।

आजकल इसे "ATM" (Any Time Milk) भी कहते है । बकरी मांस को चेवणी कहते है ।

1. सिरोही :-यह सिरोही, जालौर, अजमेर, उदयपुर, में पायी जाती है । यह मांस के लिए प्रसिद्ध है ।
2. झाखवाडी :- मांस के लिए प्रसिद्ध ।
3. मारवाडी/लोही :- यह मारवाड के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रो व आर्द्र मरूस्थलीय क्षेत्र जैसे :-
   बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, पाली, बाडमेर, जालौर, में पायी जाती है । यह भी मांस के लिए प्रसिद्ध है ।
4. शेखावाटी :- यह सीकर व झुंझुनूँ में पायी जाती है । इसका विकास (CAZRI) ने किया । इसके सींग नही होते है व अच्छा दूध देती है ।
5. बारबरी :- यह राजस्थान के दक्षिण व दक्षिण-पूर्वी भाग में जैसे-डूँगरपुर, बांसवाडा व (ABCD) में पायी जाती है । यह दूध के लिए प्रसिद्ध है ।
6. जखराना :- यह जखराना गाँव(बहरोड, अलवर) में संकेन्द्रित है । यह सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है ।
7. जमनापुरी :- यह बकरी की सर्वाधिक सुन्दर नस्ल है । यह दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान, कोटा, बूँदी, झालावाड में पायी जाती है । यह त्रिप्रयोजनीय नस्ल है अर्थात् यह मांस, दूध, भार ढोने में प्रयुक्त होती है ।
8. पर्वतसरी :- यह परबतसर (नागौर), अजमेर, जयपुर, टोंक व झुंझुनूँ में पायी जाती है । यह अच्छा दूध देने वाली नस्ल है ।

वरूण गाँव:- नागौर जिले के वरूण गाँव की बकरियाँ पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है । यहाँ की बकरियों से मांस व ऊन की प्राप्ति होती है ।

भैंसे

सर्वाधिक प्रथम-जयपुर, द्वितीय-अलवर

भैंस की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
मुर्रा (खुण्डी)	पूर्वी राजस्थान	राजस्थान में सर्वाधिक पायी जाने व सींग - खुडीदार सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल
सूरती	उदयपुर	मूलतः गुजरात की नस्ल
जाफराबादी	दक्षिणी पश्चिमी राजस्थान	मूलतः गुजरात की नस्ल
मेहसाना	दक्षिणी पश्चिमी राजस्थान	मूलतः गुजरात
भदावरी	पूर्वी राजस्थान	मूलतः उत्तरप्रदेश की नस्ल एवं व

ऊँट

सर्वाधिक-जैसलमेर 2014 में राज्य पशु घोषित

ऊँट की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
बीकानेरी	बीकानेरी	बोझा ढोने के लिए
नाचना	जैसलमेर(नाचना)	सुन्दरता, दौड के लिए प्रसिद्ध
गोमठ	जोधपुर	ऊँट सवारी के लिए प्रसिद्ध है ।

अन्य नस्ले :- सिंधी, कच्छी, मेवाती

नोटः- कैमल मिल्क मिनी प्लांट जयपुर में स्थापित किया जायेगा ।

19वीं जनगणना ऊटों में 22 प्रतिशत की कमी आयी हर साल 23 हजार ऊँट होते है ।

घोडा

सर्वा. –बीकानेर

अश्व की नस्ले	क्षेत्र	विशेष
मालाणी	बाडमेर	सर्वश्रेष्ठ घोडे की नस्ल
मारवाडी	पश्चिमी राजस्थान	तेज दौडने हेतु
काठियावाडी	बाडमेर, जालौर	इस नस्ल के घोडे का सिर अरबी घोडे जैसा होता है

- घोडों का तीर्थ स्थल–आलम जी धोरा (गुढामलानी, बाडमेर)
- गधे :– सर्वाधिक– बाडमेर
- सुअर :– सर्वाधिक–भरतपुर
- कुक्कुट :– सर्वाधिक–अजमेर, उदयपुर
- खच्चर :– सर्वाधिक–अलवर

राजस्थान के प्रमुख पशु मेले

	पशु मेला	स्थान	पशु गौवंश
1.	श्री बलदेव पशु मेला	मेडता (नागौर)	नागौरी
2.	श्री तेजाजी पशु मेला	परबतसर (नागौर)	नागौरी
3.	श्री रामदेव पशु मेला	मानासर (नागौर)	नागौरी
4.	श्री मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाडा (बाडमेर)	थारपारकर कांकरेज
5.	चन्द्रभागा पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड)	मालवी
6.	श्री गोमतीसागर पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड)	मालवी
7.	जसवंत पशु मेला	भरतपुर	हरियाणवी
8.	गोगामेडी पशु मेला	हनुमानगढ	हरियाणवी
9.	शिवरात्रि पशु मेला	करौली	हरियाणवी
10.	कार्तिक पशु मेला	पुष्कर (अजमेर)	गीर

पशु प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र

	प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र	स्थान
1.	राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र	जोहडबीड
2.	केन्द्रीय पशु अनुसंधान केन्द्र	सुरतगढ, श्रीगंगानगर
3.	भेड एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर,टोक
4.	भैंस अनुसंधान केन्द्र	वल्लभ नगर, उदयपुर
5.	भैंस प्रजनन केन्द्र	डग (झालावाड), कुम्हेर(भरतपुर)
6.	बुल मदर फार्म	चाँदन गाँव, जैसलमेर
7.	बकरी प्रजनन केन्द्र	रामसर, अजमेर
8.	शूकर /सुअर प्रजनन केन्द्र	अलवर
9.	अश्व प्रजनन व अनुसंधान संस्थान	केरू (जोधपुर)

पशु विकास से संबंधित प्रमुख योजनाएँ और संस्थान

1. गोपाल योजना – षुरूआत – 2 अक्टूबर, 1990
   उद्देश्य – पशुधन पालन के आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण युवाओं को षामिल करके पशुओं की नस्ल में सुधार करना और युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना।
2. **ADMAS (Animal Diseases Monitoring and Surveillance)**
   शुरूआत – 1999
   उद्देश्य – ICAR (भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद्) के माध्यम से गाय और भैंस की नस्लों को रोग मुक्त बनाना।
3. मुख्यमंत्री पशुधन नि:शुल्क दवा योजना
   शुरूआत – 15 अगस्त, 2012
   उद्देश्य – राज्य सरकार द्वारा पशु विकास के लिए आवश्यक दवाइयाँ नि:शुल्क उपलब्ध कराना।
4. अविका कवच योजना
   शुरूआत – 2004 पुन : 2009 एवं 2018

उद्देश्य – यह भेडों की बीमा योजना है जिसके माध्यम से एस.सी./एस.टी. और बी.पी.एल. को बीमा प्रीमियम पर 80% सब्सिडी प्रदान की जायेगी तथा अन्य के लिए 70% सब्सिडी प्रदान की जायेगी।

5. भामाशाह पशु बीमा योजना
   - इसमें बीमा एक या तीन साल का होगा।
   - बीमा राशि में BPL/SC/ST को 70% एवं शेष पशुपालकों को 50% अनुदान दिया जायेगा।
   - बीमा राशि गाय – 40000 रुपये
   - बीमा राशि भैंस – 50000 रुपये
   - भेड /बकरी /सूअर (10 Unit) – 50000 रुपये
   - ऊँट /घोडा /गधा – 50000 रुपये

एक परिवार में अधिकतम 5 बडे और 50 छोटे पशुओं का बीमा करवा सकते है ।

कला एवं संस्कृति

राजस्थान के त्यौहार

विक्रमी संवत् के महिने : (चन्द्रमा आधारित)

(1) चैत्र (2) वैशाख
(3) ज्येष्ठ (4) आषाढ
(5) श्रावण (6) भाद्रपद
(7) आश्विन (8) कार्तिक
(9) मार्गशीर्ष (10) पौष
(11) माघ (12) फाल्गुन

- सूर्य आधारित कैलेण्डर से बराबर करने के लिए प्रत्येक तीसरे वर्ष विक्रमी संवत् में एक (1) अतिरिक्त महिना जोड दिया जाता है इसे अधिकमास कहा जाता है । चन्द्रमा आधारित $29\frac{1}{2} \times 12 = 355$
$= 365 + 10\ days\ (1\ year)$

पौष –	माघ –	जनवरी
माघ –	फाल्गुन –	फरवरी
फाल्गुन –	चैत्र –	मार्च
चैत्र –	वैशाख –	अप्रैल
वैशाख –	ज्येष्ठ –	मई
ज्येष्ठ –	आषाढ –	जून
आषाढ –	श्रावण –	जुलाई
श्रावण –	भाद्रपद –	अगस्त
भाद्रपद –	आश्विन –	सितम्बर
आश्विन –	कार्तिक –	अक्टूबर
कार्तिक –	मार्गशीर्ष –	नवम्बर
मार्गशीर्ष –	पौष –	दिसम्बर

''तीज त्यौंहारा बावडी ले डूबी गणगौर''

हिन्दु त्यौहार श्रावण शुक्ल तृतीय अर्थात् (छोटी तीज) से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीय (गणगौर) पर समाप्त हो जाते हैं ।

1. श्रावण

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
पंचमी – नाग पंचमी	तृतीयाः – छोटी तीज
नवमी – निडरी नवमी (नेवले की पूजा)	जयपुर में छोटी तीज की सवारी प्रसिद्ध है
अमावस्याः हरयाली अमावस्या मेलेः 1. कल्पवृक्ष – मांगलियावास (अजमेर) 2. फतेह सागर झील मेला (उदयपुर) 3. बुढा जोहड मेला (श्री गंगानगर)	• यह पति – पत्नी के प्रेम का त्यौहार है । • यह प्रकृति – प्रेम का त्यौहार है । • इसमें महिलाएँ ''लहरिया'' ओढनी ओढती हैं । • सिंजाराः नवविवाहिता के लिए ससुराल पक्ष से आने वाले उपहार पूर्णिमाः रक्षाबन्धन (नारियल पूर्णिमा) इस दिन ''श्रवणकुमार'' की पूजा की जाती हैं ।

2. भाद्रपद (सबसे ज्यादा त्यौहार)

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
तृतीया : बडी तीज बूढी तीज सातुडी तीज कजली तीज • बूँदी में बडी तीज की सवारी प्रसिद्ध है ।	द्वितीया – ''बाबे री बीज'' (रामदेव जयन्ती) • रूणीचा (रामदेवरा) में रामदेवजी का मेला लगता है जो द्वितीया से लेकर ग्यारस तक चलता है । • इस मेलें को ''मारवाड का कुम्भ'' कहा जाता है ।
षष्ठी (छठ) : अब छठ (लडकी पूरे दिन खडी रहती है अच्छे वर के लिए व्रत करती है ।)	चतुर्थी : (चौथ) • गणेश चतुर्थी • शिव चतुर्थी • कलंक चतुर्थी • चतरा चौथ मेलेः 1. त्रिनेत्र गणेश मेला – रणथम्भौर 2. 'चुंगी तीर्थ मेला' – जैसलमेर (गणेश जी का मेला)
अष्टमीः कृष्ण जन्माष्टमी	
नवमीः गोगानवमी इस दिन किसान ''हल'' को 9 गाँठ वाली राखी बाँधता है ।	
	पंचमीः ऋषि पंचमी

मेले: 1. ददरेवा (चुरू) 2. गोगामेढी (हनुमानगढ) द्वादशी/बारस: बछबारस (इस दिन सबूत अनाज का प्रयोग होता है, चाकू का प्रयोग नही होता) अमावस्या : सती अमावस्या झुन्झुनु में मेला लगता है ।	• सप्त ऋषि की पूजा की जाती है । • 'माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन' मेले: 1. भोजन थाली मेला–कामा भरतपुर 2. हरिराम जी का मेला –झोरडा नागौर (साँप से बचाते है ।) अष्टमी: राधाष्टमी • सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला होता है । • इस सम्प्रदाय के लोग राधा को कृष्ण की पत्नी मानते है । दशमी – तेजादशमी परबतसर (नागौर) में पशु मेला एकादशी – जलझूलनी/देवझूलनी एकादशी (इस दिन भगवान कृष्ण को नहलाया जाता है) चतुर्दशी: अनन्त चतुर्दशी (इस दिन गणेश विसर्जन किया जाता है ।) पूर्णिमा : श्राद्ध प्रारम्भ

3. अश्विन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
श्राद्ध पक्ष (16 दिन) (कोई मंगल काम नहीं होता है 16 दिन)	एकम : शरद नवरात्र प्रारम्भ अष्टमी : दुर्गाष्टमी होमाष्टमी
• साँझी की पूजा की जाती है । गोबर और मिट्टी की गोल आकृति की पूजा की जाती है । • उदयपुर के मत्स्येन्द्र नाथ मन्दिर को साँझी का मन्दिर कहा जाता है । नाथद्वारा में केले की साँझी बनाई जाती है । श्राद्ध पक्ष के अन्तिम दिन ''थम्बुडा व्रत'' किया जाता है ।	दशमी : विजयादशमी कोटा राजस्थान मैसूर (कर्नाटक) के दशहरे प्रसिद्ध है । • हथियारों की पूजा की जाती है । • खेजडी की पूजा की जाती है । 5 जून 1988 को खेजडी पर डाक टिकट जारी हुआ था, राजस्थान का ऐसा पेड जिसकी हर चीज उपयोगी होती है । इस दिन ''लीलटांस'' को देखना शुभ माना जाता है । कन्हैया लाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी । पूर्णिमा : (शरद पूर्णिमा, रास पूर्णिमा) – मारवाड महोत्सव / मांड महोत्सव (जोधपुर) – मीरा महोत्सव – चित्तौड

4. कार्तिक

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
चतुर्थी : करवा चौथ अष्टमी: अहोई अष्टमी (सन्तान की लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत) त्रयोदशी: धनतेरस ''धनवन्तरि जयन्ती'' (धनवन्तरि भारत के बहुत बडे डॉ. थे ।)	एकम् : • गोवर्धन पूजा • नाथद्वारा में इस दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है तथा भील जनजाति बडी संख्या में भाग लेती है । द्वितीया: भैया दूज / यम द्वितीया अष्टमी: गोपाष्टमी

चतुर्दशी : रूप चतुर्दशी अमावस्या : दीपावली • भगवान महावीर का निर्वाण दिवस • दयानन्द सरस्वती का निवार्ण दिवस ।	नवमी: आंवला नवमी/अक्षय नवमी आंवला अक्षय (कभी खराब नहीं होता है ।) (दिपावली के 9 दिन बाद आंवले खाते है) एकादशी: देवउठनी एकादशी ''प्रबोधिनी एकादशी'' इस दिन ''पुष्कर मेला'' प्रारम्भ होता है । **पूर्णिमा:** • सत्यनारायण पूर्णिमा • इस दिन कार्तिक स्नान होता है । **मेले:** • पुष्कर मेला • कोलायत मेला (बीकानेर) • चन्द्रभागा मेला (झालरापाटन) • रामेश्वरम् मेला (सवाई माधोपुर) (चन्द्रभागा मेला में मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है ।) मालवी नस्ल: एम.पी. मालवा पशु होने के कारण (कोलायत में कपिल मुनि रहते थे जिन्होंने सांख्य दर्शन दिया था ।)
5. मार्गशीर्ष	कोई त्यौहार नही
6. पोष	कोई त्यौहार नहीं

7. माघ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
चतुर्थी: तिल चतुर्थी संकटहरण चतुर्थी मेला: चौथ का बरवाडा (स. माधोपुर) एकादशी: षट्तिला एकादशी (6 प्रकार के तिल का दान) अमावस्या: मौनी अमावस्या (इस दिन मौन रहा जाता है ।) • इस दिन ''कुंभ मेले का शाही स्नान'' होता है ।	एकम् : गुप्त नवरात्र प्रारम्भ पंचमी : बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा की जाती है) • इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है । पूर्णिमा: ''नवाटापरा गाँव'' (डूँगरपुर) में ''वेणेश्वर मेला'' भरता है । (एक मन्दिर का नाम) • यहाँ पर सोम माही जाखम • नदियाँ आकर मिलती है । • यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है । • वेणेश्वर को ''आदिवासियों का कुम्भ'' • तथा ''वागड का पुष्कर'' कहा जाता है ।

8. फाल्गुन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
त्रयोदशी– महाशिवरात्रि • शिवाड (सवाई माधोपुर) में ''घुश्मेश्वर महादेव जी का मेला'' भरता है	द्वितीया: फुलेरा दूज (शादी के साथे) पूर्णिमा : होली • भिनाय (अजमेर) – कोडामार होली • महावीर जी (करौली) – लठमार होली • बाडमेर – पत्थरमार होली (भिनाय में राजस्थान की पहली सहकारी समिति (1904) में बनाई थी ।) • इस दिन इलोजी (होलिका का पति) की बारात निकाली जाती है । (बाडमेर में) (इलोजी : मारवाड में ''छोडछाड का देवता'' कहते है ।) • इस दिन ब्यावर (अजमेर) में ''बादशाह'' की सवारी निकाली जाती है । • इस दिन टोडरमल बादशाह होता है । • सांगोद (कोट) – ''न्हाण की झाँकिया'' निकलती है । • जयपुर में''जन्म–मरण–परण'' का त्यौहार होता है ।

9. चैत्र

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
एकम् : धुलण्डी अष्टमी : शीतला अष्टमी (बास्योडा) इस दिन चाकसू (जयपुर) में ''गधों का मेला'' लगता है । शीतला माता का वाहन अष्टमी / नवमी:	एकम् : विक्रमी नव वर्ष प्रारम्भ (हिन्दुओं का नव वर्ष) 1956 (विक्रमी संवत्) में अकाल (छपनियाँ अकाल) पडा था । 1956 विक्रमी संवत् – 1899 ई. सन् तृतीया: गणगौर • जयपुर व उदयपुर की गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है ।
ऋषभदेव मेला – धुलेव (उदयपुर) जैनो के प्रथम भगवान (आदिनाथ) भील जनजाति इन्हे केसरिया नाथ जी या कालाजी के रूप में पूजती है । एकादशी: जौहर मेला (चित्तौडगढ) (होली के 11 दिन बाद)	• जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया है । • नाथद्वारा में इसे ''गुलाबी गणगौर'' या चुनडी गणगौर कहा जाता है । (इस दिन भगवान कृष्ण को गुलाबी चुनडी पहनाई जाती है ।) • यह(गणगौर) सर्वाधिक लोकगीतों का त्यौहार है । • इन दिन लडकियाँ अपने लिए अच्छे पति तथा अपने भाई के लिए अच्छी पत्नी के लिए व्रत करती है । • जैसलमेर में ''गणगौर'' ''चतुर्थी'' को मनाई जाती है । नवमी: राम नवमी पूर्णिमा : हनुमान जयन्ती मेले: • सालासर (चुरू) (दाढी मुँछ वाले बालाजी) • मेहंदीपुर बालाजी (दौसा) • (बालाजी दक्षिण में विष्णु भगवान को कहा जाता है ।)

10. वैशाख

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
तृतीया : धींगा गवर जोधपुर में धींग गवर मेला होता है (धींगा = जबरदस्ती)	तृतीया: अक्षय तृतीया इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बालविवाह होते है । (बीकानेर का स्थापना दिवस) विक्रम संवत् = 1547
	पूर्णिमा: • बुद्ध पूर्णिमा • पीपल पूर्णिमा

	(भगवान बुद्ध को पीपल के नीचे ज्ञान मिला था ।) मेले: 1. बाणगंगा मेला (विराटनगर जयपुर) 2. मोमतीसागर मेला (झालरापाटन) मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय-विक्रय 3. नक्की झील मेला - माउण्ट आबू 4. मातृकुण्डिया मेला - चित्तौड 5. गोतमेश्वर मेला - अरगोद (प्रतापगढ) इस दिन पोकरण में परमाणु परीक्षण किया गया था ।

11. ज्येष्ठ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
अमावस्या: बडमावस (वट वृक्ष अमावस्या)	दशमी: गंगा दशमी - कांमा (भरतपुर) में गंगा दशमी मेला होता है । एकादशी: निर्जला एकादशी - इस दिन उदयपुर में पतंगे उडाई जाती है ।

12. आषाढ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
	एकम् : गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ नवमी : भदल्या नवमी एकादशी : देवशयनी एकादशी पूर्णिमा : गुरू पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा (वेद व्यास महाभारत के रचयिता का जन्मदिन)

धर्म	यहुदी	ईसाई	इस्लाम
ईश्वर	मोजेस	जीसस	मोहम्मद साहब
पवित्र किताब	ओल्ड टेस्टामेट	बाईबल	कुरान
शुभ दिन	शनिवार	रविवार	शुक्रवार

मुस्लिम त्यौहार

- पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म "570 ई." में "मक्का (स. अरब)" में हुआ था । 622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोडकर मदीना चले गये थे । इस घटना को "हिजरत" (अरबी में) कहा जाता है तथा इस दिन से हिजरी सम्वत् (हिजरी कैलेण्डर) की शुरूआत होती है ।
- यह चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर होत है लेकिन आधिकमास नहीं जोडा जाता 632 ई. में मदीना में ही मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई थी ।

महिनों का नाम

1. मोहर्रम
2. सफर/सिफर
3. रबी-उल-अव्वल
4. रबी-उस-मानी
5. जमात-उल-अव्वल
6. जमात-उस-सानी
7. रज्जब
8. शाबान
9. रमजान
10. शव्वाल
11. जिल्काद
12. जिल्हिज

(इनमें केवल तारीख होती है ।)

1. मोहर्रम

10 तारीख:

- मोहम्मद साहब का "दोहिता हुसैन" अपने 72 साथियों के साथ कर्बला के मैदान (ईराक) में लडता हुआ मारा गया था । उसकी याद में इस दिन "ताजिये" निकाले जाते है । ताजिये ताशा वाद्य यंत्र बजाया जाता है ।

27 तारीख:

- "गलियाकोट" (डूँगरपुर) में सैयद फखरूद्दीन का उर्स
- यह दाउदी बोहरा सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान है ।

2. सफर

- 20 तारीख चेहल्लम - हुसैन के मरने के चालीस दिन पूरे हुये थे ।

3. रबी-उल-अव्वल

12 तारीख
ईद - मिलादुल नबी (मोहम्मद साहब का जन्म)
बारावफात (मोहम्मद साहब की मृत्यु)

4. रबी-उस-सानी : ×

5. जमात - उल - अव्वल : ×

6. जमात - उस - सानी :

8 तारीख:

- फारस (ईरान) के संजरी गाँव में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म

7. रजब:

1-6 तारीख :
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का "अजमेर में उर्स" भीलवाडा का गौरी परिवार झण्डा चढाकर उर्स की शुरूवात करता है ।

27 तारीख : मेराज की रात
(इस रात को मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुई थी)

8. शाबान:

14 तारीख शबेरात
इस रात मुसलमान मक्का की हीरा पहाडी पर इकट्ठे होते हैं तथा अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं ।

9. रमजान:

मुसलमानों का सबसे पवित्र महीना, इस महीनें में रोजे रखें जाते है ।

27 तारीख: शबेकद्र (इस दिन कुरान लिखी गई थी)

10. शव्वाल

1 तारीख ईद-उल-फितर (मीठी ईद)

(सिवैयों की ईद)

(भाईचारे का त्यौहार)

11. जिल्काद: 12. जिल्हिज :

इस महिने में मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते हैं (8,9,10 तारीख)
10 तारीख : ईद-उल-जुहा(बकर ईद)
(कुर्बानी का त्यौहार)

जैन त्यौहार

ऋषभ जयन्ती - चैत्र कृष्ण नवमी

महावीर जयन्ती - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

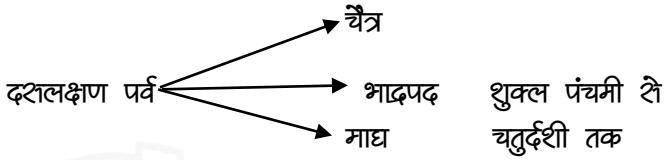

भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को "पर्यूषण पर्व" कहा जाता है । (महा पर्व)

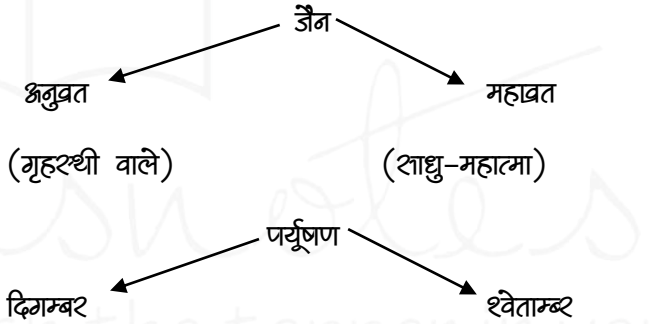

पर्यूषण : भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी	पर्यूषण - भाद्रपद कृष्ण द्वादशी - शुक्लचतुर्थ
आश्विन कृष्ण एकम् - पडवा ढोक (क्षमा याचना पर्व)	भाद्रपद शुक्ल पंचमी - संवत्सरी पर्व या क्षमा याचना पर्व
रोट तीज :	भाद्रपद शुक्ल तृतीया
सुगन्ध दसमी/धूप दसमी :	भाद्रपद शुक्ल दसमी

सिक्खों के त्यौहार

गुरू नानक जयन्ती (सिक्खों के प्रथम भगवान)	कार्तिक पूर्णिमा
गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती:	मेले: कोलायत (बीकानेर) साहबा (चुरू) पौष शुक्ल सप्तमी
सिक्खों के 10 वे भगवान	
लोहडी	13 जनवरी
वैशाखी	13 अप्रैल

सिन्धियों के त्यौहार

चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती (झूलेलाल को वरूण का अवतार मना जाता है)	चैत्र शुक्ल
थदडी सातमः	भाद्रपद कृष्ण सप्तमी

ईसाईयों के त्यौहार

गुड फ्राइडे : इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढाया गया था ।

गुड फ्राइडे :- ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है ।

ईस्टर : इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित हुये थे । यह रविवार का दिन था । 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है उसके ठीक बाद वाला रविवार, ईस्टर होता है ।

असंन्शन डे : ईस्टर के 40 दिन बाद आता है । इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थें ।

राजस्थान के लोक देवता

पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा ।
पाँचू पीर पधारज्यों, गोगाजी जेहा ॥
पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी : ये 5 पीर हैं । जिन्हे हिन्दु व मुसलमानों दोनों मानते हैं ।

1. पाबूजीः (पाबूजी राठौड)

जन्म स्थान : 1239 ई. कोलूमण्ड (जोधपुर)
पिता : धाँधल
माता : कमला दे
पत्नी : फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट की राजकुमारी)
पाबूजी की घोडी : ''केसर कालमी'
मंदिर : कोलूमंड (जोधपुर)
प्रमुख वाद्ययंत्र : रावणहत्था
उपनाम : गौ रक्षा देवता, ऊँटो के देवता, प्लेग रक्षक देवता, लक्ष्मण के अवतार, वचन पुरुष देवता, अछुतोद्धारक देवता

- पाबूजी को ''लक्ष्मण जी का अवतार'' माना जाता है ।
- पाबूजी के मेले मे 'थाली' नृत्य किया जाता है ।
- पाबूजी प्लेग रक्षक एवं ऊंटो के देवता है ।
- राजस्थान में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय पाबूजी को दिया जाता है ।
- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए चार फेरे लेकर बीच में उठकर आ गये थे अतः पश्चिमी राजस्थान में आज भी शादी मे चार फेरे लिये जाते है । ''देचू गाँव (जोधपुर)'' में ''जींदराव खींची'' के खिलाफ लडते हुये मारे गये थे ।
- चाँदा व डामा नामक 2 भील भाई इनके सहयोगी
- थें ।
- राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते हैं ।
- पाबूजी को ''प्लेग रक्षक देवता'' भी कहा जाता है ।
- कोलूमण्ड (जोधपुर) में ''चैत्र अमवस्या'' (होली के 15 दिन बाद) को पाबूजी का मेला
- पाबूजी की फड ''सबसे लोकप्रिय फड है ।'' भील जाति के भोपे इसे रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ गाते है
- पाबूजी बाईं ओर झुकी हुई पाग के लिए प्रसिद्ध है ।
- पाबूजी की पूजा हाथ भाला लिए हुए अश्वारोही के रूप में होती है ।
- थोरी जाति के लोग सारंगी द्वारा पाबूजी का यश गाते है । जिसे ''पाबू धणी री वाचना'' कहते है ।

- पाबूजी ने 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी ।
- पाबूजी के पवाडे (भजन) रेवारी जाति के लोग (किसी वीर पुरूष की याद में गाये जाने वाले) माट (बडे मटके की तरह का) वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं ।
- आशिया मोडजी की पुस्तक – ''पाबू प्रकाश''

2. रामदेवजीः (रामदेवजी तँवर)

जन्म स्थान – उण्डू काश्मीर (बाडमेर)
पिता – अजमाल जी
माता – मैणादे
पत्नी – नेतल दे (अमरकोट की राजकुमारी)
गुरू – बालीनाथ जी
मन्दिर – रूणीचा (रामदेवरा) (जैसलमेर), छोटा रामदेवरा (गुजरात), मसूरिया (जोधपुर), बराठिया (अजमेर), सूरताखेडा (चित्तौड), राजस्थान को छोटा रामदेवरा (अजमेर)
उपनाम – पीरों के पीर, रामसापीर, रुणेचा रा धणी, साम्प्रदायिकता के देवता, कृष्ण के अवतार

- रामदेवजी का जन्म विक्रमी संवत 1409 से 1462 के मध्य माना जाता है । उनका जन्म भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को हुआ था जिसे ''बाबा री बीज'' कहते है । इस जम्मा भी कहते है ।
- रामदेवजी को राव मल्लीनाथ ने पोकरण की जागीर दी थी । जो रामदेव जी ने अपनी भतीजी के विवाह मे जगमाल मालावत के पुत्र हमीर को दहेज मे दे दी ।
- विक्रमी संवत 1515 को इन्होने रामसरोवर (रूणीचा) में जीवित समाधि ले ली थी ।
- रामदेवजी के चमत्कारों को ''परचा'' कहा जाता है । इन्होने मक्का के पांच पीरों को परचा दिया था । अतः मुस्लिम समाज में ''रामसापीर'' कहलाये ।
- हरजी भाटी इनके प्रमुख सहयोगी थे ।
- डालीबाई इनकी अनन्य मेघवाल भक्त थी । जिसने रामदेवजी से एक दिन पूर्व रूणीचा में समाधि दी ।
- रामदेव जी एक मात्र लोक देवता है । जो कवि थे । रामदेव जी पुस्तक – ''चौबीस बाणियाँ'' है ।
- रामदेवजी ने ''कामडिया पंथ'' की शुरूआत की थी ।
- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा ''तेरहताली नृत्य'' किया जाता है ।
- ''भाद्रपद शुक्ल एकादशी'' को रामदेव जी ने जीवित समाधि ली थी ।
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से लेकर एकादशी तक विशाल मेला भरता है ।
- रामदेवजी के मन्दिर में ''पगल्या'' पूजे जाते है ।
- नेजा – रामदेवजी का झण्डा (पचरंगा) (नेजा = झण्डा)
- लीलों – रामदेवजी के घोडे का नाम (लीला = घोडा)
- जम्मा – रामदेवजी के जागरण
- रामदेव जी कृष्ण एवं विष्णु के अवतार माने जाते है । ये सांप्रदायिक सौहार्द एवं सदभाव के देवता है ।
- रामदेव जी छुआछूत एवं भेदभाव मिटाने वाले देवता माने जाते है ।
- रामदेव जी ने भैरव राक्षस का अंत किया था ।
- रामदेव जी के पुजारी तंवर जाति के राजपूत होते है ।
- ''रिखियां'' – रामदेवजी के मेघवाल जाति के भक्त को कहा जाता है । ये रिखियां जो भजन गाते है उन्हें ''ब्यावले'' कहा जाता है ।
- सोने या चांदी के पात्र पर रामदेव जी का चित्र खुदवाकर जो लोग गले मे पहनते है उसे ''फूल'' कहते है ।

3. गोगाजी : (गोगाजी चौहान)

जन्मस्थान : ददरेवा (चुरू) 1003 विक्रमी संवत ।
पिता का नाम : जेवर
माता का नाम : बाछल
पत्नी : केलमदे (जोधपुर)
कश्यिल (UP)
उपनाम : गोगापीर, जिन्दापीर, साँपो का देवता, गौरक्षक
गुरु : गोरखनाथ

- यह मुहम्मद गजनवी व गौरखनाथ के समकालीन थे ।
- उनका अपने मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ सम्पति का विवाद चल रहा था ।
- अर्जन – सर्जन मुस्लिम सेना लेकर आये और गोगाजी की गायों को घेर लिया अतः – अपने मौसेरे भाईयों अर्जन-सर्जन के खिलाफ गायों की रक्षा करते हुये मारे गये थे ।
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हें ''जाहिर पीर'' (साक्षात देवता) कहा था ।
- ददरेवा के मन्दिर को ''शीर्ष मेडी'' (सिर कट कर गिरा था) (चुरू) तथा
- गोगामेडी (हनुमानगढ) के मन्दिर को ''धुर मेडी'' (धड कट कर गिरा था)
- गोगामेडी (हनुमानगढ) में 11 महीने पूजा चामल जाति के मुस्लिम तथा 1 माह हिन्दू व मुसलमान दोनों मिलकर पूजा करते है ।
- ''सर्प रक्षक देवता'' के रूप में पूजे जाते है ।

- गोगाजी के मन्दिर खेजडी के नीचे बनाये जाते हैं । (गोगाजी के मन्दिर को मेडी कहते हैं ।)
- भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगाजी का विशाल मेला लगता है ।
- गोगाजी की सवारी नीली घोडी है । जिसे ''गोगा बापा'' कहा जाता है ।
- हिन्दू ''नागराज'' एवं मुस्लिम ''गोगा पीर'' की पूजा रूप मे पूजा करते है । गोगाजी की पूजा भाला लिए हुए योद्धा के रूप में की जाती है ।
- गोगा जी के मंदिर खेजडी वृक्ष के नीचे होते है ।
- गोगामेडी का मन्दिर ''मकबरा शैली'' में बना हुआ है ।
- मन्दिर में ''बिस्मिल्लाह लिखा'' हुआ है ।
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी (छोटा मन्दिर) बनी हुई है ।

4. हडबूजी सांखला

पिता – मेहा जी सांखला
जन्म – भूडेल, नागौर
गुरू – बालकनाथ
मेला – भाद्रपद शुक्ल पक्ष
उपनाम – बाल ब्रह्मचारी, वीर योद्धा, गौ रक्षक देवता
शकुन शास्त्र के ज्ञाता

- पिता की मृत्यु के बाद भूडेल छोडकर हरभमजाल में आकर रहने लगे ।
- रामदेव जी की प्रेरणा से संत बने ।
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे ।
- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया था तथा उसे एक कटार भेंट की थी । मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे । बेंगटी (जोधपुर) मे इनका मुख्य मंदिर है । बावनी जागीर भेंट की ।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया । मन्दिर में ''हडबूजी की बैलगाडी की पूजा'' की जाती है ।
- हडबूजी का वाहन – ''सियार''
- हडबूजी ''शकुनशास्त्र (भविष्य वक्ता)'' के ज्ञाता थे ।

5. मेहाजी मांगलिया

- राव चूंडा के समकालीन थे ।
- पालन-पोषण – नैनीहाल मे मांगलिया गोत्र में हुआ था । अतः मांगलिया मेहाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए ।
- मुख्य मंदिर : बापीणी (जोधपुर)
- जैसलमेर के ''राणगदेव भाटी'' के खिलाफ युद्ध में मारे गये थे ।
- इनके घोडे का नाम : किरड काबरा
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है । ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढते है ।
- इनका मेला भाद्रपद कृष्ण जन्माष्टमी को लगता है ।

6. तेजाजी

- जन्म – माघ शुक्ल चतुर्दशी 1073 ई. में
- खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था ।
- पिता – ताहड जी
- माता – रामकुंवरी
- पत्नी – पेमल दे
- घोडी – लीलण/सिणगारी
- घोडला – पुजारी (यह साँप काटे व्यक्ति का जहर मुँह से चूसकर निकालता है।)
- उपनाम – नागों के देवता, गौरक्षक देवता, धोल्या वीर, काला-बाला के देवता, कृषि उपकारक देवता

<u>तेजाजी के आराध्य स्थल</u>

पनेर (अजमेर) – तेजाजी का पुजारी माली जाति का होता है ।

ब्यावर (अजमेर) – यहाँ तेजा चौक स्थित है ।

भावता (अजमेर) – यहाँ गोमूत्र से साँप काटे व्यक्ति का इलाज होता है ।

- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थें ।
- ''सुरसुरा (अजमेर)'' नामक गाँव में लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुऐ घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी । इनके साथ उनकी पत्नि पेमल भी सती हो गई थी ।
- खरनाल मे तेजाजी का मंदिर है जिसे थान कहा जाता है ।
- जोधपुर महाराजा अभयसिंह के समय परबतसर (नागौर) में तेजाजी का मन्दिर बनवाया गया ।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को परबतसर में विशाल पशु मेला लगता है ।
- तेजाजी ''सर्परक्षक देवता'' एवं कुत्ते के काटे हुए का ईलाज किया जाता है ।
- इन्हें ''काला-बाला का देवता'' भी कहा जाता है ।
- गोगा जी को धौलिया वीर कहा जाता है ।

- गोगा जी को तलवार धारण किये हुये घोडे पर सवार योद्धा के रूप मे दर्शाया गया है । जिनकी जीभ को सर्प डस रहा है ।
- गोगा जी को डसने वाले नाग का नाम ''बासक'' था । गोगा जी के भोपा को घोडला कहा जाता है ।
- ऐसी मान्यता है कि सर्प दंशित व्यक्ति के दांये पैर मे तेजाजी की तांत (डोरी) बांध दी जाये तो विष नही चढता ।
- ''हल जोतते समय'' किसान ''तेजाजी का गीत'' गाता है ।
- 2010 में तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया ।
- तेजाजी की बहिन डुंगरी माता का मन्दिर खडनाल (नागौर) में बना हुआ है ।

7. देवनारायण जी

- जन्म स्थान : आसीन्द (भीलवाडा)
- 1243 ई. में इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था ।
- पिता : ''सवाई भोज''
- माता का नाम – सेढू बाई
- पत्नि – पीपल दे (धार नरेश जय सिंह की पुत्री)
- बचपन का नाम – उदय सिंह
- भिनाय के ठाकुर को मारकर अपने पिता व भाइयों की हत्या का बदला लिया ।
- इन्हें (देवनारायण जी) ''विष्णु भगवान का अवतार'' माना जाता है ।
- इन्हें ''औषधि का देवता'' कहा जाता है ।
- आसीन्द (भीलवाडा) व देवमाली (अजमेर) इनके मुख्य मंदिर है ।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढाये जातें है ।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है ।
- मेला : ''भाद्रपद शुक्ल सप्तमी''
- देवनारायण की फड सबसे बडी व सबसे छोटी फड है ।
- वर्तमान मे जर्मनी के म्यूजियम मे रखी हुई है ।
- यह ''जन्तर वाद्य यंत्र'' के साथ गुर्जर जाति के भोपें गाते है ।
- 1992 में इस फड पर डाक टिकट जारी हो चुका है । यह राजस्थान के पहले लोक देवता है जिन पर 2011 में 5 रूपये का डाक टिकट जारी हुआ है ।
- उनके घोडे का नाम ''लीलागर'' था ।

मुख्य मन्दिर :
1. आसीन्द (भीलवाडा)
2. जोधपुरिया (टोंक)
3. देवमाली (अजमेर)

8. देवबाबा

- मुख्य मन्दिर : नगला जहाज (भरतपुर)
- देवबाबा पशु चिकित्सक थें ।
- इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पडता है ।
- देवबाबा की सवारी भैंसा है ।

मेले

- भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)
- चैत्र शुक्ल पंचमी

9. मल्लीनाथ जी

जन्म – 1358
पिता – राव तीडा (रालखा)
माता – जीणादे
पत्नि – रूपलदे
गुरू – उगम सी

- पालन-पोषण – महेवा के शासक कान्हड देव (चाचा) ने किया ।
- ये ''मारवाड के राठौड राजा'' थे । मेवा नगर को अपनी राजधानी बनाया ।
- इन्होने राव चूंडा को मारवाड व नागौर जीतने मे सहायता की ।
- मुख्य मन्दिर : तिलवाडा (बाडमेर)
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ली एकादशी तक विशाल मेला लगता है । जहां 15 दिन का ''मल्लीनाथ पशु मेला'' होता है ।
- इनके नाम पर बाडमेर क्षेत्र का नाम मालानी पडा ।
- मलाणी नस्ल के घोडों का क्रय-विक्रय
- मल्लीनाथ जी ''भविष्य दृष्टा'' एवं चमत्कारी पुरूष थे ।
- इनकी रानी रूपा दे का मन्दिर मायाजाल (बाडमेर) में है ।
- उगमजी भाटी से योग साधना की दीक्षा ग्रहण की ।

10. तल्लीनाथ जी

मूल नाम – गांगदेव राठौड, जन्म – 1544 ई.
पिता का नाम – वीरमदेव

- ये ''शेरगढ (जोधपुर)'' के राजा थे ।
- इनके गुरू : जालन्धर नाथ
- मुख्य मंदिर : पांचोटा (जालौर)

- इन्हें "ओरण का देवता" कहा जाता है।
- ओरण : मन्दिर के आस-पास छोडी गई जमीन जहाँ से पेड- पौधे नहीं काट सकते।
- जहरीले कीडे के काटने पर इनका डोरा अथवा धागा बांधा जाता है।
- प्रकृति प्रेमी लोक देवता।

11. बिग्गा जी

- पिता : राव मोहन
- माता : सुल्तानी
- मुख्य मंदिर : रीडी (बीकानेर)
- गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे।
- ये जाखड समाज (जाट) के कुल देवता हैं।

12. खेतला जी

- मुख्य मंदिर : सोनाणा (पाली)
- मेला : "चैत्र शुक्ल एकम" को मेला लगता हैं।
- यहाँ पर "हकलाने वाले बच्चों का इलाज" होता हैं।

13. हरिराम जी

- मुख्य मंदिर : झोरडा (नागौर)
- पिता - राम नारायण
- माता - चंदणी देवी
- गुरू - भूंरा
- "सर्प रक्षक देवता"
- मेलाः "भाद्रपद शुक्ल पंचमी"
- मंदिर में "सांप की बांबी" (साँप का बिल) की पूजा की जाती हैं।

14. झरडा जी

- पाबूजी के भतीजे थे।
- पिता - बूढोंजी
- माता - केसर कंवर
- जींदराव खींची (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया
- मन्दिर :
  1. कोलुमण्ड (जोधपुर)
  2. सिंभूदडा (बीकानेर)
- इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता हैं।
- हिमाचल प्रदेश में इन्हें "बालक नाथ" कहा जाता हैं।

15. झुन्झार जी

- जन्म स्थान : इमलोहा (सीकर)
- स्थान - खेजडी के पेड के नीचे
- "स्यालोदडा (सीकर)" गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थें। यहाँ पर 'दुल्हा-दुल्हन' तथा "इनके 3 भाई" की मूर्तियाँ बनी हुई हैं।
- रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता हैं।

16. वीरफता जी

- स्थान - बबूल वृक्ष के नीचे
- मुख्य मंदिर : साथू (जालौर)
- "भाद्रपद शुक्ल नवमी" को इनका मेला लगता हैं।
- जालौर के लोकदेवता है।

17. आलम जी

- मुख्य मंदिर : धोरीमन्ना (बाडमेर)
- ढंगी नामक धोरे पर मंदिर है जिसे आलम जी का धोरा कहा जाता है।
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को मेला लगता है।
- आलम जी को "घोडा रक्षक देवता" कहा जाता है।
- आलम जी जैतमालोत राठौड थे।
- राठौडों के कुलदेवता

18. केसरिया कुंवरजी

- गोगाजी के बेटे थे।
- इन्हें भी 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता हैं।

19. मामादेव

- प्रमुख मंदिर - स्यालोदडा (सीकर)
- ये "बरसात के देवता" हैं।
- इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि इनके "तोरण की पूजा" की जाती हैं।
- इन्हें खुश करने के लिए "भैसें की बली" देनी पडती हैं।

20. डूंगजी - जवाहर जी

- "बाठोठ - पादोदा (सीकर)" गाँव के सामन्त थे तथा अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे।
- इन्हें अंग्रेजों की नसीराबाद की छावनी लूट ली थी।

राजस्थान के लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य

जनजातीय लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य

1. घूमर

- राजस्थान का ''राज्य नृत्य''
- ''लोकनृत्यों की आत्मा''
- अष्टताल राग पद्धति एवं जल सारंगधर पद्धति पर आधारित ।
- शेखावाटी मे इसे लूर कहा जाता है ।
- यह नृत्य तीन प्रकार का होता है ।
  1. लूर – राजपूत स्त्रियों द्वारा
  2. झूमरिया – बालिकाओं द्वारा
  3. झूमर – हाडौती में प्रसिद्ध जो स्त्रियों द्वारा किया जाता है ।
- उपनाम – नृत्यो का शिरमोर

राज्य का प्रतिनिधत्व नृत्य

- केवल महिलाओं द्वारा तीज-त्यौहारो तथा अन्य अवसर पर किया जाता है ।
- महिलाऐं नृत्य करते समय अपनी धुरी पर ही घूमती रहती है ।
- इसमें महिलाओं द्वारा केवल हाथों का लचकदार संचालन किया जाता है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र
  1. ढोल
  2. नगाडा
  3. शहनाई
- नृत्य में 8 चरण होते है जिन्हे ''सवाई'' कहा जाता है ।

2. कच्छी घोडी

- ''शेखावाटी क्षेत्र'' में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला व्यावसायिक लोकनृत्य
- चार – चार पुरूष 2 पंक्तियों में नृत्य करते है ।
- नृत्य करते समय ''फूल के खिलने तथा बन्द होने का दृश्य'' दिखाई देता है ।

- इसमें पुरूष लकडी की बनी घोडी कमर से बाँध कर नृत्य करते है । (ऐसे लगता है जैसे घोडे पर बैठा है ।)
- इसके उद्भव के सम्बन्ध में लोक प्रसिद्ध कथा'' है ।

3. अग्नि नृत्य

- ''जसनाथी सम्प्रदाय'' के लोगों द्वारा किया जाता है ।
- ''कतरियासर (बीकानेर)'' इसका प्रमुख केन्द्र है ।
- इसमें जलते हुये अंगारों पर नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य जाट सिद्ध द्वारा चैत्र व फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को किया जाता है ।
- नृत्य करते समय ''फते-फते'' बोलते रहते है ।
- नृत्य करते समय ''कृषि क्रियाऐ'' करते है । जो भी क्रिया किसान खेत में करता हैं ।
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य को प्रोत्साहन दिया था ।
- इस नृत्य में केवल पुरूष ही भाग लेते है ।

4. ढोल नृत्य

- ''जालौर क्षेत्र'' का लोक नृत्य
- ढोली, माली, सरगडा, भील जाति के पुरूषों द्वारा किया जाता है ।
- यह नृत्य ''थाकना शैली'' में किया जाता है ।
- जयनारायण व्यास ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था ।
- इसको घुडले खां की बेटी गिंदोली ने शुरू किया ।

5. घुडला नृत्य

- जोधपुर में महिलाओं द्वारा ''शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर'' तक यह नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य जोधपुर के ''राजा सातल'' की याद में किया जाता है जिसने घुडले खाँ को मारा था
- इसमें महिलाऐं ''सिर पर छिद्रित मटका रखकर'' नाचती है ।
- यह नृत्य रात्रि में किया जाता है ।

- मटके में जलता हुआ दीपक रखा जाता है ।
- मणिशंकर गांगुली, कोमल कोठारी तथा देवीलाल सामर ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था ।
- कोमल कोठारी को 2 बार पद्म् पुरस्कार प्राप्त हुआ था ।
- कोमल कोठारी ने विजयदान देथा के साथ मिलकर 1960 में ''बोरून्दा (जोधपुर)'' में ''रूपायन संस्थान'' की स्थापना की ।
- देवीलाल सामर ने 1952 में उदयपुर में ''भारतीय लोक कला मण्डल'' की स्थापना की । जो कठपूतली खेल के लिए जाना जाता है ।

6. तेरहताली नृत्य

- ''कामडिया पंथ'' की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय नृत्य किया जाता है ।
- अब यह एक ''व्यावसायिक लोक नृत्य'' है ।
- इसमें 9 मंजीरे दाँये पैर में तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बाँधकर एवं 2 मंजीरे हाथ में लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है । कुल 13 मंजीरे
- नृत्य करते समय महिलाऐं करतब दिखाती है । (मुँह से रूमाल उठाना आदि)
- मुख्य केन्द्र : पादरला (पाली)
- मुख्य कलाकार : मांगीबाई, कमलदास, परमदास
- वाद्य यंत्र : तानपुरा, चौतारा, मंजीरे

7. चरी नृत्य

- किशनगढ क्षेत्र में ''गुर्जर महिलाओं'' द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य
- सिर पर चरी रखकर नाचती है ''चरी में जलते हुऐ कपास के बीज'' रखे जाते है ।
- मुख्य कलाकार : फलकू बाई

> फलका - गेहूँ की रोटी
> रोगरा - बाजरे की रोटी
> बेजड- मिश्रित अनाज की रोटी

8. भवाई नृत्यः मटका नृत्य

''उदयपुर संभाग'' में भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य- इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते है ।
जैसेः अंगारो पर नाचना, तलवार पर नाचना, सिर पर 7.8 मटके रखकर नाचना

9. गींदड नृत्य

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य
- गोल घेरो में पुरूष डण्डे टकराते हुए नृत्य करते है ।
- जो पुरूष महिलाओं के कपडे पहनकर नाचता है उसे ''गणगौर'' कहा जाता है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र - ''नगाडा''

10. बम नृत्य

- ''भरतपुर क्षेत्र'' में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य
- बम नृत्य डीग तहसील का प्रसिद्ध है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र ''नगाडा''
- इसे ही बम कहा जाता है ।
- इसमें गाये जाने वाले गीत को ''रसिया'' कहा जाता है ।
- अतः इस नृत्य को ''बम रसिया'' भी कहा जाता है ।

11. चंग नृत्य

- होली के अवसर पर ''शेखावाटी क्षेत्र'' में

12. बिन्दौरी नृत्य

- होली के अवसर पर ''झालावाड क्षेत्र'' में तथा विवाहोत्सव पर किया जाता है ।

13. डांग नृत्य

- होली के अवसर पर ''नाथद्वारा क्षेत्र'' में
- वल्लभ संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा भगवान श्रीनाथजी की आराधना में ।

जनजातीय लोक नृत्य

1. भील	2. गरासिया	3.कालबेलिया	4.कंजर	5. कथौडी	6. मेव	7. लहरिया
गैर	वालर	चकरी	चकरी	मावलिया	रणबाजा	शिकारी
गवरी (राई नृत्य)	मॉंदल	शंकरिया	धाकड	होली	रतबई	
युद्ध	लूर	बागडिया				
द्विचक्की	कूद	पणिहारी				
नेजा	जावरा	इंडोणी				
घूमरा	मोरिया					
हाथीमना	गौर					

भील

1. गैर

- मेवाड क्षेत्र में भील जनजाति का एक लोक नृत्य
- यह लोकनृत्य मारवाड में भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाति, धर्म के लोग शामिल होते है ।
- गोलघेरे में डण्डे टकराते हुए पुरूषों द्वारा नृत्य किया जाता है ।
- मुख्य केन्द्र : कनाना (बाडमेर)
- नृत्य में पहने जाने वाले कपडे - झोंगी

2. गवरी

- यह धार्मिक नृत्य है ।
- मेवाड में भील पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है । इसे ''राई नृत्य'' भी कहा जाता है ।

  युद्ध : तलवार, भाले के साथ (बेहद भयानक नृत्य) युद्ध कला का प्रदर्शन करते है ।

  द्विचक्की : दो चक्र बनाकर, विवाह के अवसर पर

3. नेजा

- यह भील तथा मीणा दोनो जनजातीयों से सम्बन्धित है महिला तथा पुरूष दोनों भाग लेते है ।
- इसमें लकडी के एक डण्डे पर नारियल बाँध दिया जाता है । महिलाऐं इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरूष इसे उतारने का प्रयास करते है ।

4. घूमरा

- बांसवाडा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है ।
- दो दल होते है एक दल गाता है तथा दूसरा दल घूम-घूम कर नाचता है ।

5. हाथीमना

- विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा घुटनों के बल बैठकर नृत्य किया जाता है ।

गरासिया

1. वालर

- बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है ।
- महिला तथा पुरूष दोनो भाग लेते है ।
- नृत्य करते समय 2 वृत बनते है ।
- यह विवाह के अलावा होली व गणगौर पर भी किया जाता है ।

2. मांदल

- मांदल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है ।
- एक प्रकार का वाद्य यंत्र

3. लूर

- लूर गौत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है ।
- नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते है
  1. वर पक्ष
  2. वधु पक्ष

  इसमें वर पक्ष की महिलाऐं वधु पक्ष से कन्या की मांग करती है ।

4. कूद

बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर नृत्य

5. जवारा

गरासिया महिलाओं द्वारा होली के समय हाथों में जवार लेकर नृत्य किया जाता है ।

6. मोरिया

विवाह के समय गरासिया पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य

7. गौर

गणगौर के समय किया जाने वाला

कालबेलिया

1. चकरी

- महिलाऐ गोलाकार मुद्रा में तेज-तेज नृत्य करती हैं ।
- मुख्य कलाकार :- गुलाबों (2015 में पद्मश्री दिया गया)

2. शंकरिया

- प्रेम कहानी पर आधारित कालबेलिया युग्ल नृत्य
- नृत्यागना, कंचन सपेरा, गुलाबो, कमली, राजकी

3. बागडिया

- भीख माँगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा
  नोटः- कालबेलिया नृत्य सिखाने के लिए हाथी गाँव (आमेर) में स्कूल खोला ।
- मुख्य वाद्य यंत्रः 1. पूंगी 2. खंजरी
- कालबेलिया नृत्य यूनेस्को की हैरिटेज लिस्ट में शामिल है ।

कंजर

1. चकरी

- महिलाओं द्वारा (अविवाहित लडकिया ही भाग लेती है)
- चकरी नृत्य करते समय महिला - अस्सी कली का घाघरा पहनती है ।

2. धाकड

- कंजर पुरूषों द्वारा

कथौडी

1. मावलियाः- पुरूषों द्वारा नवरात्रे के समय
2. ढोलकी व बांसुरी प्रमुख वाद्य यंत्र है ।

होली

- महिलाओं द्वारा होली के समय
- महिलाऐं नृत्य करते समय पिरामिड बनाती है ।
- ''फडका साडी'' पहन कर नृत्य करती है ।